कितना महत्त्वपूर्ण है विज्ञान लोकप्रियकरण ?

आइवर यूशिएल
बरेली

कैसी विडम्बना है कि हमारे देश में विज्ञान को स्कूली शिक्षा के प्रारंभिक दौर से ही कक्षाओं के भीतर पढ़ाये जाने वाले एक नीरस एवं शुष्क विषय के रूप में देखा जाता है जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल उलट है। यदि छात्रों के समक्ष मनोरंजन के साथ इसको खेल–खेल में प्रस्तुत किया जाये तो शायद इससे ज्यादा रूचिकर विषय कोई और सिद्ध ना हो पाये ठीक वैसे ही जैसा कि यूरोप और अमेरिका जैसे विकसित देशों में होता हैं। वैसे भी देखा जाये तो विज्ञान केवल एक विषय ही नहीं है वरन यह हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग भी हैं। एक दिन तो क्या, एक पल के लिए भी हम इसके बिना अपने जीवन की कल्पना तक नहीं कर सकते। इस जीवन का कोई भी पक्ष हो या दिन का कोई भी पल, हम किसी न किसी रूप में विज्ञान से अपने को हमेशा जुड़ा हुआ ही पाते हैं। पानी–बिजली जैसी प्राथमिक जरूरतें जिस तरह हमारे पास तक पहुंचती हैं वह विज्ञान की ही देन हैं। रहने के लिए घर बनाने हों या पहनने के लिए कपड़े–ये विज्ञान के बिना भला कहां संभाव हैं।

तीव्र से तीव्रतर होती सुविधासम्पन्न यात्राएं विज्ञान की बदौलत ही तो संभव हो पाती हैं। चिकित्सा जगत की बात तो दूर, कृषि जैसे क्षेत्र में अब तक उपयोग में लाये जाने वाले परम्परागत तरीके भी यद्यपि विज्ञानाधारित थे परन्तु इनमें आधुनिकतम साधनों के प्रवेश से फसलों की पैदावार में जो अद्‌भुत क्रांति आयी है, उसका श्रेय भी तो विज्ञान को ही है। संचार माध्यमों के तेजी से फैलते जाल ने तो दुनिया के देशों के बीच वाली लम्बी दूरियों की खाईयाँ ही जैसे पाट कर रख दी हैं और ये दूरियाँ अब मात्र एक फोन कॉल तक सिमट कर रह गयी हैं। वीडियो कान्फ्रेंसिंग, इंटरनेट व कम्प्यूटर जैसे शब्द विज्ञान की भारी भरकम पुस्तको से बाहर निकल कर आम आदमी के बीच अपनी पैठ बनाने पर तुले हुए हैं।

भोर होने के साथ ही हवा में छँलाग मारते हुए घर में उछलकर पहुंचने वाले अखबार के साथ हम जिस चाय की चुस्की का आंनद लेने बैठ जाते हैं, ये दोनों भी तो विज्ञान के पहियों पर होते हुए ही हमारे पास तक पहुंचते हैं। गाय–भैसों वाली साधारण डेयरी से सीधे मिलने वाला दूध भी अब ढक्कन बंद बोतल या सील बंद पॉलीपैक में हम तक पंहुचने लगा है और इस तरह दिन की शुरूआत के साथ ही हमारा जुड़ाव विज्ञान के साथ प्रारम्भ हो जाता है। यदि विज्ञान के द्वारा दी गई सुविधाओं की बात छोड़ भी दें तो हमारा अपना शरीर ही इसकी विभिन्न क्रियाओं, सिद्धान्तों और उपकरणों का एक ऐसा जीता–जागता उदारहण है जिसका कोई सानी नहीं।

हमारे मस्तिष्क के अंदर प्रति सेकेण्ड़ हजारों की संख्या में ऐसी रासायनिक क्रियाएँ चलती रहती हैं जिनके आगे बड़ी–बड़ी रसायनशालाएं फेल हैं। पूरी जिन्दगी लगातार तीसों दिन चौबीसों घण्टे टनों रक्त उलीचते रहने वाले दिल के सामने शायद बेहद शक्तिशाली पम्प भी पानी मांगने लगे और इसी तरह पृथ्वी को कई बार लपेटने लायक लम्बाई वाली, शरीर में मौजूद नाडियां बिना किसी रिसाव व साफ सफाई के अपने अंदर रक्त का बहाव यदि लगातार बनाये रख पाती हैं तो इन सब क्रियाओ के पीछे कहीं न कहीं विज्ञान ही तो छिपा है और इन सब बातों की जानकारी हमें देने वाला भी तो विज्ञान ही है। इसी जानकारी के आधार पर ही हम शरीर में होने वाले क्रियाकलापों में आयी गड़बड़ियों को ठीक करने के प्रयास के बारे में सोच पाये हैं और इसी सोच के आधार पर खोजी गई हैं ऐसी औषधियाँ जिनकी सफलता से हम अपने शरीर को स्वस्थ एवं निरोगी रख सके हैं।

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में कोई राष्ट्र अपनी वैज्ञानिक प्रगति का जितना अधिक लाभ उठा पया है, उसी स्तर पर उस राष्ट्र के नागरिकों का न सिर्फ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं में सुधार हुआ है वरन उनकी आयु में भी उसी अनुपात में वृद्धि हुई और मृत्यु दर घटी है। एक समय गॉव के गॉव जिन महामारियों की चपेट में आकर पूरी तरह उजड़ जाया करते थे, वे महामारियाँ अब बीते जमाने की कहानियां बनकर रह गयी हैं। इसे किसी राष्ट्र के विकास में एक बेहद क्राँतिकारी उपलब्धि के तौर पर देखा जा सकता है।

राष्ट्र के विकास में विज्ञान का एक और बेहद महत्वपूर्ण योगदान होता है और वह है यातायात के साधनों कि रूप में। दिनों और महीनों में तय की जाने वाली साधारण सी दूरियाँ अब पलक झपकते तय हो जाती हैं और मजेदार बात यह है कि दूरियों को तय करने की यह गति किसी राष्ट्र के विकास का स्तर नापने का एक प्रामणिक–सा पैमान बन गई है यानि जितनी तेज वाहनों की रफ्तार उतना ही विकसित राष्ट्र। देखा जाए तो राष्ट्र के विकास को नापने का यह पैमाना है भी पूरी तरह उचित ही क्योंकि सही अर्थो में यदि हमें अपने राष्ट्र का तेजी से विकास करना है तो हमें हरेक पल का मूल्य समझना होगा और व्यर्थ बीतते प्रत्येक पल को बचाकर जब हम इसे किसी रचनात्मक कार्य में लगाएंगे तब ही हम बेहतरी की ओर बढ़ सकेंगे। दुनिया भर में तेजी से प्रगति करते राष्ट्रों की दौड़ में शामिल होकर यदि हमें अपना कोई स्थान बनाना है तो समय का मूल्य समझते हुए हमें इसका पूरी मुस्तैदी से उपयोग करना होगा।

इस तरह हम देखते हैं कि आधुनिक काल में किसी भी राष्ट्र के विकास में विज्ञान ही मुख्य भूमिका निभाता है। कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात, सुरक्षा व संचार से लेकर मनोरंजन तक कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां विज्ञान के सहयोग के बिना प्रगति की सिर्फ संभावना भी बन सके। इसीलिए तेजी से उन्नति की लालसा पालने वाले हर राष्ट्र एवं समाज के लिए यह जरूरी हो गया है कि वह विज्ञान को जन–जन तक पहुंचाने, उसे इसके महत्व व उपयोगिता के बारे में समझाने तथा उनके बीच इसे लोकप्रिय बनाने का प्रयास करते हुए कुछ ऐसे कदम उठाये जिससे समाज में अंध विश्वास एंव कुरीतियों का खात्मा हो और सम्पूर्ण राष्ट्र वास्तविक अर्थो में आधुनिकता की ओर बढ़ सके।

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

लोकमान्य तिलक